

अध्याय 3 निवेश अवसरों का मूल्यांकन

3.1 मूल्यांकन प्रक्रिया

कम्पनी ने खोज तथा उत्पादन (ईएण्डपी) कार्यकलापों के लिए मेज़बान देशों द्वारा आमन्त्रित अन्तर्राष्ट्रीय बोली चक्र, ब्लाक के वर्तमान संघ भागीदारों से भागीदारी हित को अपनी जिम्मेदारी सौंपने के प्रस्ताव, कम्पनी के नामित मर्चेन्ट बैंकर/परामर्शदाताओं, राजनयिक तथा अन्य चैनलों से सूचना के माध्यम से निवेश अवसर प्राप्त किए।

कम्पनी के पास ईएण्डपी परिसम्पत्तियों के अभिग्रहण के लिए कोई परिभाषित/प्रलेखित नीति नहीं है। तथापि इसने इसको उपलब्ध अवसरों के मूल्यांकन के लिए एक आन्तरिक बहु अनुशासनिक दल का गठन किया और साथ ही कानूनी, तकनीकी तथा वित्तीय सलाहकारों को नियुक्त किया। परामर्शदाताओं के निष्कर्षों के साथ बहु अनुशासनिक दल की सलाह को ईएण्डपी परिसम्पत्तियों, जो प्रथम दृष्टया कम्पनी को व्यवहार्य प्रतीत हुई, के संबंध में बोली आमंत्रण हेतु बोर्ड द्वारा निर्णय और अनुमोदन करने के लिए कम्पनी के प्रबन्धन को प्रस्तुत किया जाता है। कम्पनी की वित्तीय क्षमता से अधिक निवेश राशि अर्थात् 75 मिलियन अमरीकी डालर या ₹ 300 करोड़, जो भी कम है, के मामले में प्रस्ताव अधिकृत सचिव समिति (ईसीएस) तथा आर्थिक मामलों की मंत्रिमंडल समिति (सीसीईए) को अनुमोदन हेतु भेजा जाता है।

मंत्रालय ने बताया (अक्टूबर 2010) कि न तो ऐसी आवश्यकता हुई थी और न ही तेल तथा गैस अवसरों की प्राप्ति के लिए निश्चित प्रक्रिया/नीति का होना वांछित माना गया था क्योंकि प्रत्येक अवसर एक निराला मामला था।

उत्तर मान्य नहीं है क्योंकि एक प्रलेखित नीति मूल प्राचलों को निश्चित करेगी जिसके चहुंओर जोखिम को उचित रूप से कम करने के लिए विधिवत सचेतना प्रक्रिया पूरी की जा सकेगी क्योंकि ईएण्डपी कारोबार अनिश्चित प्रतिफल के साथ पूंजी तीव्रताबोधक है।

लेखापरीक्षा में 45 ईएण्डपी परिसम्पत्तियों में से 20 में निवेश अवसरों के मूल्यांकन की समीक्षा की गई। सात निवेश अवसरों में कुछ अपर्याप्ताएं देखी गई थीं जिनकी चर्चा नीचे की गई है,

3.2 अपर्याप्त तकनीकी अध्ययन तथा डाटा का पुनः वैधीकरण न करना

कम्पनी ने ओएमवी अक्तीन्जेशैलशाफ्ट, आस्ट्रिया से बिक्री/ खरीद शर्त के अनुसार सूडापेट (सूडान की राष्ट्रीय तेल कम्पनी) के 3.72 प्रतिशत के "अवशेष वित्त" से 24.06 मिलियन अमरीकी डालर (₹ 109.44 करोड़) पर 23.5 प्रतिशत भागीदारी हित के साथ ब्लाक - 5बी, सूडान प्राप्त किया (मई 2004)। लेखापरीक्षा में देखा गया कि परामर्शदाताओं-गैफनी, क्लाइन एण्ड एसोसिएट (जीसीए) ने पूर्व अभिग्रहण तकनीकी अध्ययन में स्पष्ट किया कि ब्लाक में निर्धारित भण्डार विक्रेता द्वारा उपलब्ध कराए गए सीमित डाटा, डाटा कक्ष से डाटा प्रतिलिपि करने की अनुमति के बिना, डाटा की समीक्षा के लिए सीमित उपलब्ध समय (केवल दो दिन) पर आधारित था और निर्दिष्ट ब्लाक क्षेत्र में प्रचलित सुरक्षा समस्याओं पर भी ध्यान दिलाया था। परामर्शदाता द्वारा व्यक्त इन प्रतिबन्धों के बावजूद कम्पनी ने डाटा के पुनः वैधीकरण के बिना जोखिम भरी परिसम्पत्ति प्राप्त की।

लेखापरीक्षा में पाया गया कि वर्ष 2006 तक भी संघ, क्षेत्र की सुगमता की कमी तथा स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा प्रतिबन्धों के कारण नियत भूकम्पीय तथा भेदन योजना कार्यान्वित नहीं कर सका। निम्नतम कार्य वचनबद्धता (एमडब्ल्यूसी) का कार्यान्वयन न होने के कारण अतिरिक्त सुरक्षा प्रभार, भेदन रिग के लिए निष्क्रिय किराया प्रभार, अन्य आकस्मिक और प्रचालन प्रभार उठाने पड़े।

जीसीए ने भेदन के लिए तीन प्रत्याशाओं, नामतः वान मचार, बारदा-1 तथा कसाफा-1 को भी क्रमशः 1267.2 मीट्रिक मिलियन स्टाक टैंक बैरल (एमएमएसटीबी), 317.1 एमएमएसटीबी तथा 26.4 एमएमएसटीबी की " जोखिम रहित सैद्धान्तिक प्राप्ति" सम्भावना के साथ प्राथमिकता दी थी। प्रचालक ने 2008 के दौरान गैर प्राथमिकता वाले दलदल में दो कुओं (मन्नी डेंग तथा न्याल) के अतिरिक्त केवल एक प्राथमिकता वाले दलदल में भेदन किया। कसाफा-1 में भण्डार की कम प्रत्याशा और स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा तीसरी पार्टी को बारदा-1 के आवंटन के कारण दो प्राथमिकता वाले दलदल कुओं के भेदन को समाप्त कर दिया गया था। भेदे गए तीन कुओं में कोई हाइड्रोकार्बन प्राप्ति नहीं हुई और इस प्रकार कम्पनी ₹ 423.84 करोड़ के बराबर 89.5 मिलियन अमरीकी डालर का व्यय करने के बाद ब्लाक छोड़ने (19 फरवरी 2009) को बाध्य हुई।

प्रबन्धन ने बताया (जनवरी 2010) कि समय सीमा के साथ और उपलब्ध डाटा के आधार पर समुचित परिश्रम करना पड़ा है तथा विभिन्न विचार प्राप्त करना न तो व्यवहार्य है और न ही वांछनीय क्योंकि कोई विशिष्ट प्रौद्योगिकी नहीं है जो भेदन के अलावा किसी विशेष स्थान पर हाइड्रोकार्बन की उपलब्धता का पूर्वानुमान कर सके। इसके अलावा ब्लाक के सुरक्षा जोखिम अधिग्रहण के समय पर ज्ञात थे और इसे अधिग्रहण मूल्य पर बातचीत करते समय ध्यान में रखा गया था।

मंत्रालय ने प्रबन्धन के उत्तर का समर्थन किया (अक्टूबर 2010)।

हम मंत्रालय/प्रबन्धन के दृष्टिकोण से सहमत नहीं हैं क्योंकि परामर्शदाता द्वारा व्यक्त महत्वपूर्ण प्रतिबन्धों की अनेदेखी करने के कारण अभिलेख में उपलब्ध नहीं थे। क्योंकि कम्पनी उचित यथोचित परिश्रम करने की स्थिति में नहीं थी इसलिए समय सीमा तथा तकनीकी डाटा की अनुपलब्धता को ध्यान में रखकर इसे परिसम्पत्ति के अधिग्रहण में आगे नहीं बढ़ना चाहिए था जिससे उच्च जोखिम उठाना पड़ा।

हमारे तकनीकी विशेषज्ञ ने विचार व्यक्त किया कि कम्पनी का उत्तर कि स्टाक में सुरक्षा जोखिम अधिग्रहण के समय पर ज्ञात था और विधिवत ध्यान में रखा गया था, कीमत में 34 मिलियन अमरीकी डालर से 89.5 मिलियन अमरीकी डालर तक की वृद्धि के मददेनजर पुष्टिकारक नहीं था जिसने जमीनी हकीकत की समझ और परियोजना योजना की कमी को दर्शाया। प्रत्याशाओं को न केवल जोखिम रहित संसाधनों द्वारा प्राथमिकता दी जाती है वरन सफलता के अवसर अर्थात् जोखिम भरे संसाधनों पर विधिवत ध्यान दिया जाता है। यदि पीएससी के उल्लंघन में स्थानीय प्राधिकारियों द्वारा बारदा क्षेत्र तीसरी पार्टी को दे दिया था और यह मन्नी डेंग तथा न्याल की अपेक्षा अधिक जोखिम रहित संसाधन था तब कम्पनी को कार्य वचनबद्धता में कमी के लिए कहना चाहिए था। इससे कम्पनी के जोखिम तथा धन व्यय में पर्याप्त रूप से कमी हुई होती।

3.3 डाटा का गलत विश्लेषण तथा व्याख्या

देवू इन्टरनेशनल कारपोरेशन (डीआईसी) ने अपने जेवी भागीदारों, अर्थात् कम्पनी, कोगास (कोरियाई गैस कम्पनी) तथा गेल को ब्लाक एडी7, म्यांमार में अपने 100 प्रतिशत पण में से क्रमशः 20: 10: 10 फार्म-आउट भागीदारी हित का प्रस्ताव किया (जुलाई 2008)। कम्पनी के भूवैज्ञानिकों के तकनीकी दल ने 6.5 ट्रिलियन क्यूबिक फीट (टीसीएफ) के सम्भावित भण्डारों का निर्धारण किया (11 अगस्त 2008) परन्तु दूसरी ओर इसके भूवैज्ञानिक एवं भूभौतिकविज्ञानी (जीएण्डजी) ग्रुप ने विचार व्यक्त किया (18 अगस्त 2008) कि भण्डार अनुमानों के लिए माना गया रेत ए1/ए3 ब्लाक के प्रमुख भाग में पत्थर हो गया था जिसके परिणामस्वरूप स्थापित पूल विद्यमान होने प्रत्याशित नहीं थे और तकनीकी दल द्वारा मूल्यांकित भण्डार गैर जांचित तथा गैर स्थापित रेटा और क्षीण अध्ययन पर आधारित थे।

तथापि, कम्पनी ने छः वर्षों की अन्वेषण अवधि के साथ निम्नतम कार्य वचनबद्धता (एमडब्ल्यूसी) के अन्तर्गत "गत लागत" सहित 20.8 मिलियन अमरीकी डालर (₹ 93.6 करोड़) तक के निवेश से जीएण्डजी ग्रुप के विचार की अनदेखी कर 20 प्रतिशत भागीदारी हित के अधिग्रहण का अनुमोदन किया (सितम्बर 2008)।

प्रचालक ने एमडब्ल्यूसी के अन्तर्गत दो अन्वेषणात्मक कुओं का भेदन किया और भेदे गए कुओं के निराशाजनक परिणामों तथा तीसरी प्रत्याशा के निम्न भण्डार अनुमानों के आधार पर तीसरी प्रत्याशा को निम्न प्राथमिकता दी गई थी। तथापि कम्पनी ने ब्लाक छोड़ने से पूर्व अपने जीएण्डजी ग्रुप से दो कुओं के भूकम्पीय डाटा तथा भेदन परिणामों को पुनः जांचित कराया जिसने अपनी पूर्व सिफारिश की पुनः पुष्टि की कि ब्लाक हाइड्रोकार्बन प्राप्ति की दृष्टि से आकर्षक प्रतीत नहीं हुआ। कम्पनी ने अगले अन्वेषण चरण में प्रवेश न करने का निर्णय लिया (जनवरी 2009) और 15.26 मिलियन अमरीकी डालर (₹ 74.99 करोड़ के बराबर) का व्यय करने के बाद ब्लाक छोड़ दिया।

प्रबन्धन ने बताया (जनवरी 2010) कि जीएण्डजी दल का विचार था कि जी3, जी5 तथा जी6 रेता, जो ए1 तथा ए3 ब्लाकों में गैस मिश्रित था, ब्लाक एडी7 में नहीं देखा गया था। जी7 रेता जो ब्लाक एडी7 का लक्ष्य था, स्थापित नहीं हुआ था और उस क्षेत्र में परीक्षण नहीं हुआ था। जीएण्डजी दल के अनुसार तकनीकी मूल्यांकन दल ने भण्डारों की संगणना के लिए 233 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र और भण्डार की 20 मीटर मोटाई को लिया था जो प्रथम दृष्टया अधिकतम भण्डार मामला होना प्रतीत होता है। इस प्रकार जीएण्डजी ग्रुप तथा तकनीकी दल के विचारों में कोई परस्पर विरोध नहीं था।

मंत्रालय ने आगे बताया (अक्टूबर 2010) कि ब्लाक इस जानकारी के साथ लिया गया था कि ए1 तथा ए3 रेता में गैस मिश्रित पूल एडी7 तक नहीं बढ़े थे और एडी7 में सम्भावित नए पूल को स्थापित करना प्राथमिक अपेक्षा थी।

हम मंत्रालय/प्रबन्धन के दृष्टिकोण से सहमत नहीं हैं क्योंकि जीएण्डजी ग्रुप ने अगस्त 2008 में स्पष्टतया सूचित किया कि गैस के स्थापित पूल के विद्यमान होने की प्रत्याशा नहीं थी। इसके अलावा हमारे तकनीकी विशेषज्ञ का भी विचार था कि जी3, जी5 तथा जी6 रेता, जो ब्लाक ए1 तथा ए3 में गैस मिश्रित था, एडी7 ब्लाक में फैला हुआ नहीं था इसलिए केवल एकल स्तरित जी7 प्ले के दृष्टिगत ब्लाक की हाइड्रोकार्बन प्रत्याशा में जोखिम अति उच्च था। आगे उसने विचार व्यक्त किया कि जीएण्डजी ग्रुप के अवलोकनों ने तकनीकी ग्रुप का विरोध किया और बाद की अनुमोदन प्रक्रिया में माने नहीं गए थे।

3.4 लीबिया में ब्लाक का अपर्याप्त तकनीकी मूल्यांकन

कम्पनी के तकनीकी दल ने प्रचालक टर्किश पेट्रोलियम ओवरसीज कम्पनी (टीपीओसी) के डाटा कक्ष का दौरा करने के बाद लीबिया में दोनों ब्लाक, एनसी-188 तथा एनसी-189 को उच्च प्राप्ति के साथ आकर्षक पाया और अच्छी संख्या में प्रेरकों की विद्यमानता के साथ एनसी-189 की तुलना में एनसी-188 को बड़ी भण्डार सम्भावना वाला पाया और उसके और व्यौर प्राप्त करने की सिफारिश की।

कम्पनी ने एक स्वतन्त्र परामर्शदाता से दल की रिपोर्ट के और विवरण या पुनः वैधीकरण कराए बिना उपर्युक्त परिसम्पत्तियों में 49 प्रतिशत भागीदारी हित के अभिग्रहण का अनुमोदन किया (जनवरी 2002) और अध्ययन खर्चों के लिए 0.15 मिलियन अमरीकी डालर और गत कीमत के 49 प्रतिशत के प्रति 3.5 मिलियन अमरीकी डालर के भुगतान (अप्रैल 2003) पर टीपीओसी के साथ फार्म-इन एग्रीमेंट किया (22 अगस्त 2002)। प्रचालक ने ब्लाक एनसी-188 में नवम्बर 2003 से जून 2004 तक के दौरान दो कुओं के भेदन के बाद केवल लघु सीमित भण्डार संरचनाओं के साथ इसे उच्च अन्वेषण जोखिमों वाला पाया और इसलिए इसे छोड़ने का निर्णय किया। कम्पनी के आन्तरिक तकनीकी दल ने डाटा का पुनः मूल्यांकन किया और विचार व्यक्त किया (मार्च 2008) कि ब्लाक में कोई महत्वपूर्ण अवशेष सम्भावना नहीं है और आगे कोई कार्यकलाप न करने की सिफारिश की। कम्पनी ने सर्वेक्षण, भेदन तथा अन्य विविध कार्यकलापों पर ₹ 68.51 करोड़ का कुल खर्च करने के बाद एनसी-188 में अपना 49 प्रतिशत भागीदारी हित छोड़ने का निर्णय लिया (मई 2008) जिसका परिहार किया जा सकता था यदि तकनीकी दल की सिफारिश का अधिग्रहण से पूर्व पुनः मूल्यांकन किया गया होता।

मंत्रालय ने बताया (अक्टूबर 2010) कि दल जिसने अक्टूबर 2001 में अंकारा का दौरा किया, ने प्रत्येक ब्लाक के लिए और विवरण प्राप्त करने की सिफारिश की थी। तथापि एक अन्य दल, जिसने जनवरी 2002 में अंकारा का दौरा किया, ने पाया कि पूर्व में पहचाने गए अनेक पथप्रदर्शन के रूप में पुष्ट हुए थे और आगे विवरण प्राप्त करने की सिफारिश नहीं की।

हम मंत्रालय के दृष्टिकोण से सहमत नहीं हैं क्योंकि कम्पनी ने आन्तरिक दल द्वारा परियोजना की प्रत्याशाओं के वैधीकरण के लिए किसी तकनीकी परामर्शदाता को नहीं लगाया। हमारे तकनीकी विशेषज्ञ ने भी लेखापरीक्षा से सहमति जताई और विचार व्यक्त किया कि 1993 से कोई कार्यकलाप न होने के मद्देनजर आगे विवरण प्राप्त किए बिना ब्लाक एनसी-188 में आगे बढ़ने का प्रबन्धन का निर्णय विवेकी निर्णय नहीं था।

3.5 भण्डार अनुमानों के अनुचित मूल्यांकन के कारण निष्फल व्यय

कम्पनी को अपतट तुर्कमेनिस्तान ब्लाक 11 तथा 12 में माएस्क आयल (एमओ) के सलाहकार त्रिस्टोन केपीटल से 30 प्रतिशत भागीदारी हित का फार्म-इन प्रस्ताव प्राप्त हुआ (जुलाई 2006)। प्रस्ताव के समय संघ (माएस्क आयल एवं विंटरशैल) ने 2003 में पश्चिम जीको से अपने द्वारा प्राप्त भूकम्पीय डाटा और पहले कुएं (गारादशलायक-1), जिसे यान्त्रिक समस्याओं के कारण 2006 में परीक्षण के बिना छोड़ दिया गया था, की भेदन रिपोर्ट प्रस्तुत की। कम्पनी के आन्तरिक दल ने प्रचालक द्वारा यथा प्रदत्त भूकम्पीय डाटा और क्षेत्रीय सूचना का विश्लेषण किया (अगस्त 2006) और माना कि गारादशलायक प्रत्याशा को पर्याप्त हाइड्रोकार्बन स्थानान्तरित हो गया है और 186 मिलियन बैरल (एमएमबी) तेल के प्राप्य भण्डारों के साथ दो बड़े पैमाने पर प्रत्याशाओं की भी पहचान की और सिफारिश की कि प्रस्ताव अनुसरणीय था।

लेखापरीक्षा में देखा गया कि कम्पनी ने तकनीकी, कानूनी तथा वित्तीय सलाहकारों के माध्यम से इस निवेश अवसर का मूल्यांकन करने की अपनी निर्धारित प्रक्रिया को अपनाने के स्थान पर अपने आन्तरिक दल द्वारा उसका मूल्यांकन कराया जिसने केवल पुराने डाटा तथा पहले कुएं की भेदन रिपोर्ट का अध्ययन किया, जिसे बिना परीक्षण के छोड़ दिया गया था, जिसके संबंध में कोई परीक्षण रिपोर्ट उपलब्ध नहीं थी।

यदि कम्पनी ने विधिवत सचेतना दिखाई होती तो ईएण्डपी परिसम्पत्तियों में प्रभार, सील तथा भण्डार जैसे प्राथमिक घटकों, जो विशिष्ट क्षेत्र या ब्लाक में हाइड्रोकार्बन के व्यवहार्य भण्डारों की उपलब्धता के लिए अनिवार्य हैं, की अनुपस्थिति या उपस्थिति पहले ही सुनिश्चित की जा सकती थी। तथापि कम्पनी केवल द्वितीय प्रत्याशा अर्थात डार्ट डेनिज-1 कुएं के भेदन के बाद इन मूल घटकों का पता लगा सकी।

प्रबन्धन ने बताया (जनवरी 2010) कि कम्पनी के तकनीकी दल द्वारा ब्लाक 11 तथा 12 की प्रत्याशाओं की जानकारी के आधार पर पहचानी गई प्रत्याशाओं का विस्तृत स्वतन्त्र तकनीकी आर्थिक विश्लेषण किया गया था और विक्रेता द्वारा प्राप्त नवीनतम तकनीकी डाटा का बाद में कम्पनी के तकनीकी दल द्वारा विधिवत सचेतना के दौरान अध्ययन किया गया था।

मंत्रालय ने आगे बताया (अक्तूबर 2010) कि तकनीकी दल ने भण्डार गुणवत्ता, ट्रैप सत्यनिष्ठा स्रोत जैसे प्राचलों के आधार पर हाइड्रोकार्बन सम्भावना पर चर्चा की थी और ट्रैप में हाइड्रोकार्बन स्थानान्तरण तथा ब्लाक 11 एवं 12 के दक्षिण के प्रति भरपूर हाइड्रोकार्बन उपस्थिति एक वैध संकेत था कि ब्लाक ज्ञात सम्भावित हाइड्रोकार्बन क्षेत्र में था। चूंकि ओवीएल दल तकनीकी रूप से दक्ष था इसलिए परामर्शदाता हायर करने की आवश्यकता महसूस नहीं की गई थी।

हम प्रबन्धन/मंत्रालय के दृष्टिकोण से सहमत नहीं हैं क्योंकि गारादशलायक संरचना में उपलब्ध सम्भावित प्रत्याशाओं का छोड़े गए कुएं में परीक्षण नहीं किया जा सका। उपर्युक्त तथ्यों से पता चला कि विक्रेता के अनुमानित 186 एमएमबी तेल प्राप्य भण्डारों के आधार पर 2006 में 30 प्रतिशत पण प्राप्त करने का निर्णय निवेश अवसर के मूल्यांकन के लिए तकनीकी, कानूनी तथा वित्तीय सलाहकार की सहायता के बिना किया गया था। इसके अलावा यह 2003 के पुराने भूकम्पीय डाटा के आधार पर और केवल पहले कुआं, जो परीक्षण बिना छोड़ दिया गया था, की भेदन रिपोर्ट के भरोसे पर भी था जिससे 14.96 मिलियन अमरीकी डालर (₹ 67.32 करोड़) का व्यय निष्फल हो गया।

हमारे तकनीकी विशेषज्ञ ने लेखापरीक्षा आपत्ति से सहमत होते हुए माना कि प्राथमिक घटक जैसे प्रभार, सील तथा भण्डार की उपस्थिति किसी ब्लाक में आवश्यक रूप से उपस्थित होनी अपेक्षित थी परन्तु इस मामले में तीन घटकों में से कोई भी उपस्थित नहीं था और इसलिए उचित सचेतना स्वयं दोषपूर्ण थी।

3.6 अपव्यय

कम्पनी ने नजवात नजम ब्लाक (एनएन) कतर के लिए कतर सरकार, जिसका प्रतिनिधित्व कतर पेट्रोलियम ने किया, के साथ मूल्यांकन, विकास तथा उत्पादन भागीदारी अनुबन्ध (अनुबन्ध) (2005) हस्ताक्षर करने के माध्यम से 100 प्रतिशत भागीदारी हित प्राप्त किया जिसमें नामित ब्लाक से खोज के मामले में केवल कच्चे तेल का निष्कर्षण अनुमत किया गया और यदि गैस या अन्य खनिज की खोज की गई तो उस तक पहुँच संविदात्मक रूप में कम्पनी को अनुमत नहीं थी। लेखापरीक्षा में देखा गया कि अनुबन्ध पर हस्ताक्षर करने के समय कम्पनी ने मौजूद मूल तेल की मात्रा (ओओआईपी) 187.72 मिलियन मीट्रिक बैरल आफ आयल इक्विवलेंट (एमएमबीओ) (सिद्ध तेल - 98.159 एमएमबीओ+सम्भावित तेल -89.561 एमएमबीओ) अनुमानित की। तेल भण्डारों का अनुमान विशेषकर तब जब कम्पनी को यह ज्ञात था कि गैस, यदि कोई खोजी गई, पर इसका कोई ठेकागत अधिकार नहीं है, स्वतन्त्र तकनीकी सलाहकार से कम्पनी के अनुमानित भण्डारों का पुनः वैधीकरण किए बिना मात्र कतर पेट्रोलियम द्वारा मुहैया मानचित्रों तथा डाटा के आधार पर था।

कम्पनी को भेदन पर पता चला कि दो परतें 17.68 एमएमबीओ तथा 21.31 एमएमबीओ तक अउत्पाद्य तेल वाली थीं; एक परत में केवल 14.6 एमएमबीओ तेल था, जैसा प्रमाणित किया गया, उसमें से केवल 2.24 एमएमबीओ प्राप्य था, एक जल मिश्रित था तथा अन्य तीन परतें गैस मिश्रित थीं जिन पर कम्पनी का ठेकागत रूप से कोई अधिकार नहीं था। इसके अलावा 187.72 एमएमबीओ के इसके अनुमानित ओओआईपी की तुलना में 2.24 एमएमबीओ की वास्तविक प्राप्य कच्चा तेल खोज पर्याप्त रूप से निम्न थी। तेल की व्यावसायिक रूप से अव्यवहार्य खोज तथा गैस पर कोई ठेकागत अधिकार न होने के परिणामस्वरूप ब्लाक छोड़ दिया गया था (मई 2008) जिससे ₹ 369.45 करोड़ (₹ 45 प्रति अमरीकी डालर की दर पर 82.10 मिलियन अमरीकी डालर) का सम्पूर्ण खर्च अपव्यय हो गया जिसका परिहार किया जा सकता था यदि कम्पनी ने कतर पेट्रोलियम द्वारा दिए गए मात्र मानचित्रों तथा डाटा पर निर्भर रहने की अपेक्षा किसी स्वतन्त्र तकनीकी सलाहकार से अपने अनुमानित भण्डारों की संवीक्षा के लिए डाटा के पुनः वैधीकरण को प्राथमिकता दी होती।

प्रबन्धन ने बताया (जनवरी 2010) कि 187.72 एमएमबीओ का अनुमानित ओओआईपी (आयल इनीशियली इन प्लेस) (प्रामाणिक तेल-98.159 एमएमबीओ+सम्भावित तेल-89.561 एमएमबीओ) कतर पेट्रोलियम द्वारा उपलब्ध कराए गए डाटा पर आधारित था और भण्डारों के अनुमान के लिए प्रयुक्त प्रणाली उद्योग मानक तथा व्यवहार के अनुसार थी। कोई भी पहले से यह निर्दिष्ट नहीं कर सकता कि कितने विचलन अनुमत हैं।

मंत्रालय ने प्रबन्धन के उत्तर की पुष्टि की (अक्तूबर 2010)।

हम मंत्रालय/प्रबन्धन के दृष्टिकोण से सहमत नहीं हैं क्योंकि कम्पनी द्वारा भण्डार अनुमान कतर पेट्रोलियम द्वारा दिए गए मात्र मानचित्रों तथा डाटा पर आधारित थे और यह जानने के बावजूद कि विचलन निर्दिष्ट नहीं किया जा सकता है, प्रबन्धन ने स्वतन्त्र तकनीकी सलाहकार से डाटा का पुनः वैधीकरण नहीं कराया। इसके अलावा अन्तर्राष्ट्रीय रूप से स्वीकृत पेट्रोलियम संसाधन प्रबन्धन प्रणाली भी यह संकेत करती है कि संसाधन मूल्यांकन प्रक्रिया में पेट्रोलियम संचय (यों) से सम्बद्ध परियोजना की पहचान करना, आरम्भ में मौजूद पेट्रोलियम की मात्राओं का अनुमान लगाना, यह अनुमान करना कि उन मौजूद मात्राओं का मार्ग जिसे प्रत्येक परियोजना द्वारा प्राप्त किया जा सकता है, शामिल होते हैं जबकि कम्पनी ने केवल तेल के भण्डारों का अनुमान लगाया और न कि गैस और दोनों का, जो एकमात्र रूप से कतर पेट्रोलियम द्वारा दिए गए मानचित्रों तथा डाटा पर आधारित था।

हमारे तकनीकी विशेषज्ञ का विचार था कि 2डी डाटा पर कम्पनी द्वारा अनुमानित विश्लेषण ने 188 एमएमबीओ के बराबर ओओआईपी दर्शाया जिसमें से 98 एमएमबीओ प्रामाणिक श्रेणी में रखा गया जिसे मूल्यांकन कुएं के भेदन पर 15 एमएमबीओ तक कम किया गया। मानक उद्योग व्यवहार में ऐसी स्थिति की प्रत्याशा नहीं की जाती है। अन्तिम विश्लेषण में जोखिम आरम्भिक चरण में ही कम किया जा सकता था यदि पेट्रोलियम संसाधन प्रबन्धन प्रणाली की मानक परिभाषाओं तथा मार्गनिर्देशों को कम्पनी द्वारा व्यवहार में लाया गया होता।

3.7 अपर्याप्त तकनीकी अध्ययन तथा डाटा का पुनः वैधीकरण न किया जाना

कम्पनी ने ईएनआई (प्रचालक) जो कांगो में ब्लाक "मेरट्रेस प्रोफोण्डे नोड" (एमटीपीएन) में 60 प्रतिशत पीआई का स्वामी था, से तुल्य तकनीकी मूल्य और वित्तीय मूल्य द्वारा शासित नहीं, आधार पर भारत में ब्लाक एमएन-डीडब्ल्यूएन-2002/1 में ओएनजीसी की 34 प्रतिशत पीआई के साथ अदला बदली करने के द्वारा 20 प्रतिशत भागीदारी हित (पीआई) प्राप्त किया (फरवरी 2007)।

अदला बदली के समय एक कुंए की प्रतिबद्धता के साथ ब्लाक खोज के तृतीय चरण में था। चरण-II के अन्त तक संघ ने दो कुओं, अर्थात एचटीएनएम-1 तथा जुलू मेरीन-1 का भेदन किया परन्तु हाइड्रोकार्बन की खोज न होने के कारण बन्द तथा छोड़ दिए गए थे।

लेखापरीक्षा में देखा गया कि आन्तरिक दल ने निवेश अवसर का मूल्यांकन करते समय अपनी रिपोर्ट में उल्लेख किया कि प्रचालक ने केवल देखने के प्रयोजन हेतु 2डी एवं 3डी भूकम्पीय डाटा प्रस्तुत किए और अनुमापी तथा परिकल्पित अनुमानित मात्राओं के लिए उनके द्वारा ध्यान में रखे गए प्राचल पूर्व (2002) व्याख्या पर आधारित थे। इस परिसीमन के साथ दल ने ब्लाक के लिए 634.75 एमएमबी का कुल भण्डार अनुमानित किया था जैसा कि पांच प्राथमिकताकृत प्रत्याशाओं, अर्थात हिती पूर्व, हिती मध्य, नकासू, नटान्गू तथा तेहीलेबी के संबंध में प्रचालक द्वारा अनुमान किया गया।

आन्तरिक दल द्वारा व्यक्त किए गए इन परिसीमनों तथा पूर्व में भेदे गए दो कुओं के निराशाजनक परिणामों के बावजूद डाटा के पुनः वैधीकरण बिना कम्पनी ने इस जोखिमी परिसम्पत्ति को प्राप्त किया, तकनीकी, कानूनी तथा वित्तीय सलाहकारों के माध्यम से निवेश अवसर के मूल्यांकन की अपनी निर्धारित प्रक्रिया से विचलन किया।

इसके अलावा यह देखा गया था कि 3डी डाटा के पुनः वैधीकरण के बाद प्रचालक ने ऊपर उल्लिखित पूर्व प्राथमिकीकृत पांच प्रत्याशाओं को अन्य प्रत्याशा अर्थात एचवीएएम-1 द्वारा बदल दिया था और पहले ही प्राथमिकीकृत प्रत्याशाओं के निराशाजनक परिणामों के मद्देनजर 5 परतों में 322.8 एमबीओई के कुल भण्डार का अनुमान किया। तथापि एचवीएएम-1 प्रत्याशा के भेदन पर प्रचालक ने एक परत में केवल 20.22 एमबीओई के भण्डार की खोज की। प्रचालक परिचालन समस्या के कारण 5024 मीटर की लक्ष्य गहराई को भी प्राप्त नहीं कर सका क्योंकि भेदन 4,516 मीटर की लक्ष्य गहराई पर बन्द कर दिया गया था। इसलिए पालोकोऊफार्मेशन, जो द्वितीयक खोज लक्ष्य था, के ओलीगोर्सन खण्ड की सम्भावना नहीं खोजी गई थी।

तेल की वाणिज्यिक रूप से अव्यवहार्य खोज के परिणामस्वरूप ब्लाक छोड़ दिया गया था (दिसम्बर 2009) जिससे कम्पनी द्वारा ₹ 67.78 करोड़ के बराबर 11.59 मिलियन अमरीकी डालर तथा ओएनजीसी द्वारा ₹ 36.11 करोड़ के बराबर 8.65 मिलियन अमरीकी डालर (₹ 45/अमरीकी डालर की दर 8.65 मिलियन अमरीकी डालर) का सम्पूर्ण व्यय निष्फल हो गया जिसका परिहार किया जा सकता था यदि कम्पनी ने प्रचालक द्वारा यथा प्रस्तुत अनुमानित भण्डार पर पूर्णतया भरोसा करने की अपेक्षा किसी स्वतन्त्र तकनीकी सलाहकार से डाटा के पुनः वैधीकरण को प्राथमिकता दी होती।

प्रबन्धन ने बताया (दिसम्बर 2010) कि किसी ब्लाक में उत्पन्न सभी डाटा का अभिरक्षक प्रचालक होता है और किसी संघ में भागीदार तथा मेजवान सरकार दोनों प्रचालक द्वारा उत्पन्न डाटा/सूचना पर भरोसा करते हैं। इसके अलावा अदला-बदली सौदा होने पर कम्पनी ने तीसरी पार्टी सलाहकार नियुक्त किए बिना आन्तरिक तकनीकी मूल्यांकन कराने का निर्णय किया और कम्पनी केवल पर्याप्त मूल्य की उत्पादक/अन्वेषित परिसम्पत्तियों की विधिवत सचेतना के लिए तकनीकी, वित्तीय तथा कानूनी सलाहकारों को लगाती है। चूंकि इस खोज रकवा में निवेश अन्वेषित या उत्पादक परिसम्पत्तियों की तुलना में तुलात्मक रूप से निम्न है इसलिए आन्तरिक निर्धारण पर भरोसा करना पर्याप्त माना गया था।

हम प्रबन्धन के दृष्टिकोण से सहमत नहीं हैं क्योंकि कम्पनी द्वारा भण्डार अनुमान एकमात्र रूप से प्रचालक द्वारा प्रस्तुत डाटा पर आधारित था जो केवल देखने के प्रयोजन के लिए था जबकि नवीनतम डाटा मूल्यांकन के लिए भी प्रस्तुत नहीं किया गया था। इसके अलावा ब्लाक में दो भेदे गए कुओं के निराशाजनक परिणामों को जानने के बावजूद कम्पनी ने बाह्य सलाहकारों से पुनः वैधीकरण बिना प्रचालक द्वारा प्रस्तुत पुराने डाटा पर भरोसा किया। यह तथ्य कि पर्याप्त मूल्य की केवल उत्पादक/अन्वेषित परिसम्पत्तियों की विधिवत सचेतना के लिए कम्पनी द्वारा तकनीकी, कानूनी तथा वित्तीय

सलाहकार लगाए जाते हैं न कि खोज ब्लाकों के लिए, सही नहीं है क्योंकि कम्पनी ने अपने अनेक पूर्व खोज ब्लाकों के मूल्यांकन के लिए बाह्य सलाहकार लगाए थे।

तकनीकी विशेषज्ञ ने लेखापरीक्षा टिप्पणी की पुष्टि करते हुए विचार व्यक्त किया कि कम्पनी द्वारा किया गया अदला-बदली सौदा भूकम्पीय डाटा के दृश्य निर्धारण के आधार पर था और संगणनाएं पुराने 2002 डाटा पर आधारित थीं जबकि सौदा केवल 2007 में ही हुआ। कम्पनी का आन्तरिक निर्धारण मूल रूप से तीसरी पार्टी सलाहकार के माध्यम से कराने के स्थान पर प्रचालकों की पहुंच पर आधारित था। इसके अलावा कम्पनी को पहले ही असफल परिणामों वाले क्षेत्रों की तुलना में पूर्णतया खोजे गए क्षेत्र के लिए विभेदक अभिगम अपनाना चाहिए था।

3.8 मूल्यांकन के दौरान विधिवत सचेतना की अनदेखी करने के कारण उत्पादन का आस्थगन

मानसरोवर एनर्जी कोलम्बिया लिमिटेड (एमईसीएल), सिनोपेक (चीन की राष्ट्रीय तेल कम्पनी) के साथ 50: 50 जेवीसी 875 मिलियन अमरीकी डालर के लिए कोलम्बिया में ओमीमैक्स डी कोलम्बिया की ईएण्डपी परिसम्पत्ति प्राप्त करने के लिए कम्पनी द्वारा बनाई गई थी जिसमें से ओवीएल का हिस्सा 437.5 मिलियन अमरीकी डालर था।

विधिवत सचेतना के लिए कम्पनी द्वारा नियुक्त सलाहकार डेन्टन विल्डे एण्ड साप्टे ने अधिग्रहण से पूर्व उल्लेख किया कि ओमीमैक्स क्षेत्र के उत्पादन के एकमात्र क्रेता के रूप में इकोपेट्रोल (कोलम्बिया की राष्ट्रीय तेल कम्पनी) की हानि क्षेत्र उत्पादन को हानिकारक हो सकती थी, विक्रेता का रीयल एस्टेट के किसी भाग पर कोई स्वामित्व अधिकार नहीं था क्योंकि तत्कालीन मालिक से हस्तान्तरित परिसम्पत्तियों से संलग्न अधिकारों तथा दायित्वों सहित पूर्ण स्वामित्व उनको सौंपे नहीं गए थे।

सलाहकार द्वारा दी गई चेतावनी के विषयों की जानकारी होने के बावजूद कम्पनी अधिग्रहण के साथ आगे बढ़ी परन्तु ओमीमैक्स क्षेत्र से सम्पूर्ण उत्पादन का एकल क्रेता होने के मद्देनजर इकोपेट्रोल द्वारा कच्चा तेल न उठाने की दशा में अपने हित की रक्षा करने के लिए अनुबन्ध में उचित खण्ड समाविष्ट करने में कम्पनी विफल हो गई।

अनुबन्ध में उचित खण्ड के अभाव में अपनी शोधनशाला के कार्य न करने के कारण इकोपेट्रोल द्वारा कच्चा तेल न उठाने के कारण 2009 के दौरान 2,10,000 बैरल कच्चा तेल (50 प्रतिशत होने पर कम्पनी का हिस्सा 1,05,000 बैरल) का उत्पादन एमईसीएल को स्थगित करना पड़ा था। इकोपेट्रोल ने 2010 में ओमीमैक्स क्षेत्र से भारी कच्चे तेल की सम्पूर्ण मात्रा भी उठाने में अपनी असमर्थता व्यक्त की थी।

प्रबन्धन ने बताया (जनवरी 2010) कि यथा उल्लिखित विधिवत सचेतना रिपोर्ट की आपत्तियों से क्षेत्र में कभी कोई प्रचालन समस्या नहीं हुई थी और उसके कारण कम्पनी ने किसी उत्पादन प्रतिबन्ध का सामना नहीं किया।

मंत्रालय ने बताया (अक्टूबर 2010) कि शोधनशाला में एक दुर्घटना, नदी के जल स्तर में कमी के कारण इकोपेट्रोल शोधनशाला से उत्पाद को उठाने पर प्रतिबन्धों के कारण क्षेत्र का दैनिक उत्पादन प्रभावित हुआ था।

हम मंत्रालय/प्रबन्धन के दृष्टिकोण से सहमत नहीं हैं क्योंकि सलाहकार से सचेतना कि क्षेत्र उत्पादन के क्रेता के रूप में इकोपेट्रोल शोधनशाला की कोई हानि कम्पनी को पर्याप्त हानिकर होगी, के बावजूद कम्पनी ने अपने हितों की सुरक्षा नहीं की।

हमारे तकनीकी विशेषज्ञ ने माना कि कम्पनी ने क्षेत्र में कभी भी किसी प्रचालन समस्या का सामना नहीं किया था और न ही किसी उत्पादन प्रतिबन्ध का सामना किया परन्तु इस सम्भावना से इनकार नहीं किया जा सकता था। इकोपेट्रोल द्वारा कच्चा तेल न उठाने के कारण उत्पादन राजस्व की वसूली न होने/विलम्बित वसूली होने के कारण कम्पनी को हानि हुई थी।

निष्कर्षतः कम्पनी द्वारा निवेश अवसरों के मूल्यांकन में कुछ कमियां देखी गई थीं। परिणामस्वरूप कम्पनी ने ₹ 1108 करोड़ की हानि उठाई। इन कमियों को निवेश अवसरों के मूल्यांकन के लिए प्रलेखित नीति/प्रक्रियाओं के अभाव और जोखिमों को कम करने के लिए पेट्रोलियम संसाधन प्रबन्धन प्रणाली के मानक मार्गनिर्देशों तथा प्रथाओं के दखलदारों के अननुपालन को आरोपित किया जा सकता था।

सिफारिशें # 1

कम्पनी उत्पादक, अन्वेषित तथा खोज परिसम्पत्तियों की प्राप्ति के लिए निवेश अवसरों के मूल्यांकन के लिए पेट्रोलियम संसाधन प्रबन्धन प्रणाली की प्रथाओं के अनुरूप एक नीति बनाए और मार्गनिर्देश तैयार करे ताकि जोखिमों को कम किया जा सके।





अध्याय

4

संयुक्त उद्यमों की रचना

